प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय

"मृदुला गर्ग का जीवन वृत्त एवं साहित्य - परिचय"

प्रस्तावना

१.१ मृदुला गर्ग का जीवनवृत्त

१.१.१ जन्म

१.१.२ बचपन

१.१.३ शिक्षा

१.१.४ माता - पिता

१.१.५ विवाह या वैवाहिक जीवन

१.१.६ परिवार

१.१.७ साहित्यिक माहौल

१.२ मृदुल गर्ग के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

१.२.१ बाह्य व्यक्तित्व

१.२.२ आंतरिक व्यक्तित्व

१.२.३ कलाप्रिय

१.२.४ सौंदर्यप्रिय

१.२.५ घुमक्कडी वृत्ति

१.२.६ बागवानी का शौक

१.२.७ संवेदनशील

१.२.८ विभिन्न रचनाकारोंसे प्रभावित

१.३ मृदुलाजीके साहित्य का संक्षिप्त परिचय

१.३.१ कहानीकार मृदुला

१.३.२ उपन्यासकार मृदुला

१.४ अन्य गद्य कृतियाँ

१.४.१ नाट्य साहित्य

१.४.२ लेख - संग्रह

१.४.३ संस्मरण

१.४.४ अनुवाद साहित्य

१.५ पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

प्रथम अध्याय
"मृदुला गर्ग का जीवनवृत्त एवं साहित्य - परिचय"

प्रस्तावना :

साठोत्तरी कथा साहित्यकारों में मृदुला गर्ग का नाम उँचा हैं। साहित्यकार जिस वातावरण में रहता है, जो संघर्ष वह अपने जीवन में करता है, अनुभव लेता है, उसी की अभिव्यक्ति वह सर्जनशील कल्पना के द्‌वारा करता है। जिस समाज में रहता है, उसी समाज की समस्याएँ उनके लेखन का स्त्रोत होती है। अत: उनके भोगे हुए जीवन का साहित्यपर क्या प्रभाव पड़ा है, यह देखना भी जरूरी होता है। किसी साहित्य का अनुशीलन करने के लिए साहित्यकार का जीवन जानना पड़ता है। महिला लेखिका को सारे रिश्ते सँभालकर अपना व्यक्तित्व बनाना पड़ता है।

साठोत्तरी महिला कथाकारों में ख्यातिप्राप्त मृदुला जी को एक लेखिका के रूप में अपने को स्थापित करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। एक चर्चित कथाकार के रूप में उन्होंने अपना स्थान बनाया है, लेकिन यह स्थान पाने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ा। एक व्यक्ति तथा एक लेखिका इन दोनों रूपों में अनेक उतार - चढाव भरी स्थितियों से गुजरते हुए उन्होंने अपनी मंजिल पानेकी कोशिश की हैं।

मृदुला गर्ग का जीवनवृत्त :

सातवे दशक के बाद सक्रिय रूप से हिंदी कथा - साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश करनेवाली मृदुला गर्ग आज की बहुचर्चित कथाकार है। मृदुलाजीके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में उनके परिवार की भूमिका तथा परिवेशगत संस्कार प्रमुख रहे हैं। उनके साहित्य से परिचय करने से पहले उनके जीवनवृत्त की जानकारी प्राप्त करना जरूरी हैं।

वैसे रचनाकार की रचना से उसका व्यक्तित्व प्रतिफलित होता है, उसके साहित्य को व्यक्तित्व से अलग नहीं किया जा सकता। हर साहित्यकार का साहित्य उसके व्यक्तित्व से नजर आता है। अत: मृदुला गर्ग की साहित्यिक रचनाओंमें झाँकनेवाले निर्भिक, स्वतंत्र विचारोंवाले व्यक्तित्व को जानने के लिए उनकी जिन्दगी को परखना उचित है।

१.१.१ जन्म :

मृदुलाजीका जन्म २५ अक्तूबर १९३८ को सुप्रसिद्ध शहर कोलकत्ता के एक अमीर परिवार में हुआ। तीन – चार वर्ष की आयु में उनके पिताजी का तबादला दिल्ली होने कारण मृदुलाजीकी पूरी पढ़ाई दिल्ली में हुई।

१.१.२ बचपन :

बचपन से ही मृदुलाजी को साहित्य पढ़ने का उसे अनूदित करने का शौक था। अत: छोटी सी उम्र में ही उन्होंने हिंदी व अँग्रेजी दोनों भाषाओं का मौलिक व अनूदित साहित्य पढ़ा। कथा साहित्य पढ़ने की उनकी प्रवृत्ती बचपन से ही थी।

१.१.३ शिक्षा :

मेधावी और प्रखर बुद्धिजीवी मृदुलाजीने एम्. ए. (अर्थशास्त्र) में दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में किया और १९६० से १९६३ तक दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज और जानकी देवी कॉलेज में प्राध्यापिका के रूप में अध्यापन का काम किया। पढ़ाई के अलावा अभिनय में भी विशेष रूचि होने के कारण उन्होंने अनेक नाटकोंमें अभिनय करके पुरस्कार प्राप्त किए।

१.१.४ माता – पिता :

मृदुलाजी के लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में उनके पिताजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मृदुलाजीके पिता का नाम श्री. बी. पी. जैन है। पिता का स्नेह एवं प्यार मिला। लेकिन माँ के लाड़प्यार से वंचित रही। पिताने ही माँ के वात्सल्य और ममता से पालन – पोषण किया।

१.१.५ विवाह या वैवाहिक जीवन :

अपनी युवावस्था में किसी लड़के के साथ प्रेम में न पड़ते हुए उन्होंने बाकायदा परम्परागत रूप से विवाह किया। अपने स्वयं के इश्क के चक्कर से दूर रहने के बारे में वे नि:संकोच रूपसे बताती हैं – ''बकौल जुम्गी चाचा, मैं अपना सिर हमेशा किताबों में घुसेडे रखती थी। एसलिए मुझे देखकर किसी लड़के में सोहदा बनने की तड़प नहीं उठनेवाली थी?''[१]

---

१) साहित्य–अमृत – सितम्बर १९९८ 'दीदी के याद में' – मृदुला गर्ग – पृ. ४६

मृदुलाजीका विवाह १९६३ में श्री. आनंदप्रकाश गर्ग के साथ हुआ। वे अभियन्ता है। विवाह के पश्चात मृदुलाजीने नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़नेका प्रमुख कारण था – अपने घर को दी गई प्राथमिकता। ''घर गृहस्थी में तालमेल एवं सुचारूपन से निर्विघ्न हेतु उन्होंने अपनी नौकरी को त्याग करनें में तनिक भी संकोच नहीं किया। इनकी प्रबल धारणा रही है कि ममता एवं पारिवारिक कीमत पर नारी – नौकरी अर्थहीन है। और सुम्बन्धों में कटुता एवं दूरी का कारण बनती है।''[१] अर्थात जहाँ पतिका तबादला होता, वहाँ अपने पति के साथ जाती।

१.६ परिवार :

मृदुलाजी अपने परिवार के बारे में बहुत खुश है। उन्हें दो पुत्र हैं।

१) शशांक विक्रम

२) आशीश विक्रम

दोनों का विवाह हो चुका है। पहली बहू अपर्णा शशांक विक्रम और दुसरी वंदिता आशीश विक्रम।

अपने दाम्पत्य सम्बन्धों को आम पति – पत्नी की तरह मानते हुए वे कहती हैं – ''हम पति – पत्नी एक दुसरे के काम में खामखाह टाँग नहीं अड़ाते है। एक दुसरे की मसरूफियत और आदतों से समय – समय पर किसी भी पति – पत्नी की तरह कुढ – चिढ़भी लेते हैं। सच तो यह है कि जिन्दगी का मजा ही टकराने में है और साथ रहने का मतलब ही टकराना है। हमारे यहाँ तो वैसे भी हर किसी को जो वह सोचता है, कहने की छुट है और जो वह वाकई करना चाहता है करने की। ऐसे में बहस भी अवश्यंभावी है और टकराहट भी। सो टकराते रहते है और जिन्दगी का आनन्द लेते हैं। जो जिया नहीं वह क्या खाक लिखेगा।''[२] इस प्रकार पारिवारिक जीवन के संघर्ष एवं टकराव को भी वह आवश्यक मानती है।

१.७ साहित्यिक माहौल :

मृदुला छोटी उम्र की थी। तभी से उसमें साहित्य सृजन की ललक थी। अत: उन्हें

---

१) जैनेंद्र और मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित नर–नारी सम्बन्ध – डॉ. सत्या जैन – पृ. १५७–१५८

२) सारीका – अक्तूबर १९८४ – पृ. ४९

साहित्य सृजन के लिए पिता का बहुत साथ रहा है। मृदुलाजीके चार बहने और एक भाई हैं। उनके भाई बहने भी साहित्य - पठन व सृजन में रूचि रखते हैं। अत: पारिवारिक साहित्यिक माहौल के कारण ही मृदुलाजीने साहित्य - संसार में अपना नाम उजागर किया है। अपने लेखन के बारे में वे कहती है - ''मैं किसी विशेष विचारधारा से प्रेरित होकर नहीं लिखती, बल्कि वैयक्तिक और सामाजिक अनुभवोंसे प्राप्त जीवनदृष्टि के आधारपर लिखती हूँ। मानसिक स्वाधीनता एक ऐसा मुल्य है, जो आधुनिक काल में ही अधिक विकसित हुआ हैं और मेरे साहित्य की विषय वस्तू रहा है।''[१]

सन १९७१ से लेकर उन्होंने अपना साहित्य संसार खड़ा किया, जो आज तक निरंतर चल रहा है। उन्होंने आजतक ९ कहानी संग्रह, ६ उपन्यास, ३ नाटक, २ लेखसंग्रह और अनुवाद साहित्य लिखा है।

पिताजीकी प्रेरणा एवं पारिवारिक जिम्मेदारी निभाते हुए सामंजस्य से मृदुला सृजन कार्य में जुटी रही। एकरव्यतिप्राप्त लेखिका के रूपमें स्थापित करने के लिए मृदुला गर्ग को अनेक मुश्किलोंसे गुजरना पड़ा हैं।

१.२ मृदुला गर्ग के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

१.२.१ बाह्य व्यक्तित्व :

किसी भी रचनाकार को अवगत करने के लिए उसके आंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व को जानना आवश्यक होता है।

आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व की धनी मृदुला जीका कद छोटा, रंग गोरा, छोटे कटे बाल, बड़ी - बड़ी आँखें, गोल चेहरेपर मंद मुस्कान उनके भव्य व्यक्तित्व की पहचान है। मृदुभाषी, स्नेहमयी, मृदुलाजी अपनी बातों से सामने वाली व्यक्ति को आकर्षित करती है। उनके कोमल एवं मृदु व्यवहार, दृढ विचार ये सारी बातें उनके व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करती है। उनके गरिमामय व्यक्तित्व को साकार करती हुई शीलप्रभा वर्मा कहती है -

---

१) आजकल - फरवरी १९८२ 'परिचर्चा महिला साहित्यकारों से' मृदुला गर्ग - पृ. ९

''श्रीमती मृदुला गर्ग सुदर्शना हैं। वह भी बोल्ड़ और उनका लेखन भी बोल्ड़ हैं। सहनभूति न वे चाहती हैं न की बाँटती हैं। एक सूक्ष्म पारदर्शी वेदनाधारा उनके लेखन और व्यक्तित्व में बहती हुई दिखाई देती है, वह कभी हंसी के नीचे छलकती है कभी शुद्ध त्रासदी बनकर उभरती है।''[१]

१.२.२ आंतरिक व्यक्तित्व :

आंतरिक व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र के गुणों और विशिष्टताओंसे जाना जाता है। व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य विशेषताओंसे व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनता है। अत: व्यक्ति के आंतरिक व्यक्तित्व को जानने के लिए उसके अंतर्गुणों से परिचित होना आवश्यक है। मृदुलाजी बचपनसे जिज्ञासू, अध्ययनशील होने के कारण हमेशा पढ़ने में मशगुल थी। बचपन से मेधावी होने के कारण एम्. ए. अर्थशास्त्र की परीक्षा में उन्हें छात्रवृत्ति मिली।

१.२.३ कलाप्रिय :

मृदुलाजी कलात्मक अभिरूचिसे सराहनीय है। उनका घर कलात्मक वस्तुओंका संग्रहालय है।

१.२.४ सौंदर्यप्रिय :

फूलों की सुंदरता को निहारने के अदभुत गुण के कारण एक दिन रात के बारह बजे अपने घर के बारह बरस पहले के नागफनी के पौधे पर खिलते फूल को जो बहुत ही खुबसूरत लग रहा था, उनकी नौकरानी ने उसी रात बारह बजे दिखाया था। जीवन में अनुपम से साक्षात्कार करने का मौका केक्टस पर खिले फूल की तरह उन्हें पहलीबार मिला। गुलाबी रंग का यह फूल देखकर भावपूर्ण होकर कहती है – ''कैक्टस पर खिले फूल का सौंदर्य आमफूल से बिलकुल भिन्न है। अवर्णनीय, अनुपम काँटोंके गुंजलक के बीच सुकुमार फुल का खिलना मोहक ही नहीं क्रान्तिकारी मालूम पड़ता है। कीचड़के बीच कमलकी उपाधि फीकी है उसके सामने।''[२]

---

१) महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ – डॉ. शीलप्रभा वर्मा – पृ. ४१

२) रंगढंग – मृदुला गर्ग – पृ.१४–१५

१.२.५ घुमक्कडी वृत्ति :

अपने पिता के संस्कारों के परिणामस्वरूप उसमें घुमक्कडी वृत्ति भी हैं। ऐतिहासिक तथा अन्य स्थलों की जानकारी हासिल करना उनके व्यक्तित्व का पहलू है। न केवल भारत बल्कि विदेश भ्रमण का भी उन्हें शौक है। अत: भ्रमण से प्राप्त अनुभव उन्होंने अपने साहित्य में शब्दबद्ध किए हैं।

१.२.६ बागवानी का शौक :

सौंदर्य प्रिय मृदुलाजी को बागवानी का बेहद शौक है। दिल्ली आने से पहले छोटे कस्बे में रहते हुए उन्होंने यह शौक पूरा किया था। दिल्ली में किराए के मकान मालिक ने कहा था – ''क्या जंगल बना रखा है छज्रेपर''[१] तो उन्हें सारे गमले, पौधे हटा देने पड़े थे। तो उन्हें काफी दु:ख हुआ था। अपने पौधों से उन्हें अपने बच्चे जैसा प्यार रहता।

१.२.७ संवेदनशील :

लेखिका की संवेदनशीलता का परिचय उनके साहित्य से होता है। भोपाल गैस काण्ड़ (१९८४) का जहरीला प्रभाव पड़ा था। उसी गैस काण्ड़ का इतना परिणाम हुआ था कि, लेखिका की आवाज ही गुम हो गई थी। तो डॉक्टरने 'ॐ नम: शिवाय' का पाठ करने के लिए कहा था। ''ॐ नम: शिवाय का पाठ करो। उससे बढ़िया इलाज नहीं है। सदियों के शोधसे प्राप्त ज्ञान बतलाता है कि, वाक्तंतुओं के लिए सर्वोत्तम व्यायाम वही है, सो मैंने किया और आवाज लौट आई।''[२] इसी उदाहरणसे लेखिका का संवेदनशील स्वभाव नजर आता है।

१.२.८ विभिन्न रचनाकारोंसे प्रभावित :

मृदुलाजी को बचपनसे ही साहित्य पढ़ने का शौक था। इसीकारण विभिन्न रचनाकारोके साहित्य सें वह प्रभावित थी। शरतचंद्र, ऑस्कर वाईल्ड, दास्तोयवस्की, चेखव, जगदम्बा प्रसाद दीक्षित, निर्मल वर्मा तथा विदेश में सैलबेलो, गैबरियल मारकेज, टोनी मॉरिसन। आज की नमिता सिंह, माधवी कुट्टी, महाश्वेतादेवी, मृणाल पांड़े, मंजुल भगत, चित्रा मुदगल, सिम्मी हर्षिता आदि। लेखिकाओंका लेखन मृदुलाजी को संजीदगी से प्रभावित करता है।

---

१) रंगढंग – मृदुला गर्ग – पृ. १४–१५
२) चुकते नहीं सवाल – मृदुला गर्ग – पृ. १५३

UNIVERSITY KOLHAPUR

१.३ मृदुलाजीके साहित्य का संक्षिप्त परिचय :

१.३.१ कहानीकार मृदुला :

आठवे दशक की महिला कथाकार मृदुला गर्ग विविध जीवन संदर्भोपर लेखन किया है। उन्होंने कहानी क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने वैविध्यपूर्ण कथारचनाएँ लिखी है। मृदुलाजी के कहानियोंके बारेमें योगेश गुप्त लिखते हैं – ''मृदुला गर्ग अपनी कहानियों में वैयक्तिक से सामाजिक और सामाजिक से दार्शनिक की यात्रा करती हुई दिखती है। घटनाओं और चरित्रों को सहजभाव से व्यक्त करती हैं और मानती हैं कि थीम जितना नया होगा कला उतनीही निखरेगी। अच्छी बात यह हैं कि कथ्य के स्तरपर वह शत प्रतिशत नानकन फर्मिस्ट है और साहित्य में लम्बी खोज की यात्रा की पहली शर्त शायद यही है।''[१]

मृदुला गर्ग के कुलमिलकर ९ कहानी संग्रह प्रसिद्ध हुए हैं।

१) कितनी कैदे (इ.स. १९७५)

२) टुकड़ा – टुकड़ा आदमी (इ.स. १९७७)

३) ड़ेफोड़िल जल रहे हैं (इ.स. १९७८)

४) ग्लेशियर से (इ.स. १९८०)

५) उर्फ सैम (इ.स. १९८२)

६) दुनिया का कायदा (इ.स. १९८३)

७) शहर के नाम (इ.स. १९९०)

८) चर्चित कहानियाँ (इ.स. १९९३)

९) समागम (इ.स. १९९६)

१.३.२ उपन्यासकार मृदुला :

बचपनसे ही मृदुलाजीने हिंदी और अँग्रजी साहित्य का अनुवाद किया। उन्होंने हिंदी / अँग्रजी साहित्य को पढ़ा है। अत: बचपनसे ही सृजन प्रक्रिया थी और साहित्यिक माहौंल था। अपने लिखने के बारे में वह कहती है कि – ''अजब फितूरी दिमाग पाया है मैंने। पता नहीं

---

१) आजकल – दिसंबर १९७७ 'नारी का रचना संसार' योगेश गुप्त का लेख – पृ. ३५

उसका ताल्लुक औरत होने से है या लेखक होनेसे। पर कहानी मुझे तभी सुझती है जब न लिखने के तमाम कारण एक साथ जूटें हों।''[१]

मृदुलाजीने ९ कहानी संग्रह लिखे हैं, पर कहानी की परिसीमा को सीमित मानते हुए उन्हें उपन्यास लेखन सुविधाजनक लगता है – ''उपन्यास को मैंने प्राथमिकता दी, क्यों कि जो मैं कहना चाहती थी, वह कहानी में सीमित नहीं कर सकती। कहानी में मैंने क्षण को पकड़ा है और उपन्यास में जीवन की विस्तीर्णता को। थीम को लेने के पश्चात् मुझे लगता है कि 'मैं उसको कहानी में पूरा नहीं कर पा रही हूँ इसलिए उपन्यास को ही प्राथमिकता देती हूँ।''[२]

इसी विस्तीर्ण विषय के कारण उन्होंने छ: उपन्यासोंका निर्माण किया। जो अलग अलग विषय को लेकर लिखे गए हैं।

उपन्यास लेखन

१) उसके हिस्से की धूप – (इ.स. १९७५)

२) वंशज (इ.स. १९७६)

३) चितकोबरा (इ.स. १९७९)

४) अनित्य (इ.स. १९८०)

५) मैं और मैं (इ.स. १९८४)

६) कठगुलाब (इ.स. १९९६)

१.४ अन्य गद्य कृतियाँ :

मृदुला गर्ग का साहित्यिक संसारमें बहुत महत्वपूर्ण स्थान हैं। अत: उन्होंने सिर्फ उपन्यास कहानियाँ ही नहीं लिखी। उन्होंने इसके अलावा ३ नाटक, २ लेखसंग्रह, संस्मरण लेख और अनुवाद साहित्यमें अपना स्थान बनाया है। अत: सफल कहानीकार, उपन्यासकार से अलग उन्होंने नाटक संस्मरण, अनूदित साहित्य का भी निर्माण किया है। अत: उसका संक्षिप्त परिचय

---

१) मृदुला गर्ग – लेखिका का आत्मकथ्य – पृ. ३७

२) आजकल – फरवरी १९८२ – परिचर्चा महिला उन साहित्यकारों सें – मृदुला गर्ग – पृ. ९.

नाट्य साहित्य

१) एक और अजनबी (इ.स. १९७८)

२) जादू का कालीन (इ.स. १९९३)

३) तीन कैदे (इ.स. १९९६)

१.५ लेख संग्रह

१) रंग – ढंग (इ.स. १९९५)

२) चुकते नहीं सवाल (इ.स. १९९९)

१.६ संस्मरण :

१) दीदी की याद में ('साहित्य अमृत' सितंबर १९९८ में प्रकाशित)

२) 'एक महा आख्यान' लघु उपन्यास – सा निबट गया ('हंस' सितम्बर १९९८ में प्रकाशित)

ये दोनो संस्मरण लेख है। इस संस्मरण लेखो में अपनी बहन की जीवन स्मृतियों की यादें,उनकी आदतें, उनका आकर्षक व्यक्तित्व तथा मंजुलजीकी अनेक यादें उन लेखों में संग्रहित हैं।

१.७ अनुवाद साहित्य :

१) 'उसके हिस्से की धूप' इस उपन्यास का 'A Touch of Sun' के रूप में स्वयंद्वारा ही अंग्रेजी में अनुवाद.

२) 'डेफोड़िल जल रहें हैं' इस कहानी का अंग्रेजी में 'efodils on fire' शीर्षक से अनुवाद.

३) योगेश गुप्त की कहानियोंका अँग्रेजी में अनुवाद 'Sky Scraper' शीर्षक से।

४) खुद की 'अगली सुबह' कहानी का 'The Morning' नामसे अंग्रेजी में अनुवाद।

५) 'एक तिकोना दायरा' आस्ट्रियन लेखिका विकी बाम के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'Man Never Know' का हिंदी अनुवाद।

६) इजेबेल एंड्रस के एकांकी 'ब्राइड़ फ्राम द हिल्स' का हिंदी रूपांतर 'दुलहिन एक पहाड़ की' नाम से।

१.८ पुरस्कार एवं सम्मान :

कोई रचना पुरस्कृत होने परही रचनाकार की लौकिक ख्याति तथा कीर्ति और अधिक बढ़ जाती है। अत: मृदुलाजी की रचनाएँ काफी चर्चित और विवादास्पद होने के उपरान्त भी पुरस्कृत हुई है –

१) 'कितनी कैदे' कहानी को 'कहानी' पत्रिका द्वारा सन् १९७२ में सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार।

२) 'उसके हिस्से की धूप' को मध्यप्रदेश साहित्य परिषद द्वारा 'महाराजा वीर सिंह पुरस्कार' से १९७५ में सम्मानित।

३) 'एक और अजनबी' नाटक को १९७८ में आकाशवाणी द्वारा पुरस्कार।

४) 'जादू का कालीन' बाल नाटक को मध्यप्रदेश साहित्य परिषद से 'सेठ गोविन्ददास पुरस्कार' सन १९९३ मे प्राप्त।

५) पूरे साहित्य के आधार पर सन १९८८ – ८९ का हिंदी अकादमी का 'साहित्यकार सम्मान'।

निष्कर्ष :

मृदुलाजीका व्यक्तित्व अपने जीवनयात्रा के विविध पहलुओंसे गुजरता हुआ परिलक्षित होता है। बचपनसे ही साहित्य के प्रति रूचि रखनेवालि मृदुलाजी को अपने पिता के कारण साहित्यिक वातावरण मिला। माँ का ही प्यार पिता से मिला। अपने पिता की छत्र छाया में पली सभी भाई – बहनों ने साहित्य संसार में अपना नाम उजागर किया है। साहित्यिक माहौल अच्छा होने के कारण उनका लेखकीय व्यक्तित्व आधिक प्रखरता से निखर उठा है।

अपने परिवार को संभालते हुए पति, बच्चे सभी का अच्छा पोषण करते हुए उन्होंने साहित्य क्षेत्र में सफलता पायी है। साहित्य - सृजन किया है। सौम्य व आकर्षक व्यक्तित्व की धनी मृदुलाजी का आंतरिक व्यक्तित्व भी अनेक गुणोंसे निर्मित है।

१) दिल्ली और कोलकत्ता जैसे महानगरीय जीवन में मृदुलाजी का बचपन एवं युवावस्था का जीवन बीता। अत: महानगरीय समस्याओंसे वह भलिभाँती परिचित थी।

२) पिताजी के घर में उत्तम संस्कार प्राप्त हुए। इतनाही नहीं बचपन से लेखन की प्रेरणा पिताजी से ही मिलती रही।

३) लेखिका उच्चशिक्षा विभूषित होने के बाद दिल्ली के कॉलेज में प्राध्यापिका बनी। अभियंता पति की पारिवारिक जिम्मेदारी निभाने के लिए नौकरी से त्यागपत्र देना उसके सामंजस्य गुणपर प्रकाश ड़ालता है।

४) दो पुत्रों को उच्चशिक्षित बनाया। परिवार में रममान होकर साहित्य - सृजन किया। करियर निर्माण में पारिवारिक जिम्मेदारी को बाधा नहीं माना।

५) मृदुला एक सशक्त महिला उपन्यासकार के रूप में जानी जाती है। एक जिम्मेदार पत्नी एवं माँ की झलक उनके साहित्य में भी स्पष्टता से दिखायी देती है। परिवार की जिम्मेदारी बखूबी निभानेवाली मृदुला वैवाहिक जीवन की अच्छाई - बुराई से परिचित थी।

६) मृदुला विभिन्न साहित्यकारों की रचनाओंसे प्रभावित रही। अत: वह बंगला, अँग्रेजी एवं हिंदी के रचनाकारों का कथा - साहित्य गहरायी से पढती रही। इस प्रकार वह हमेशा अध्ययनरत रही।

७) मृदुला के उपन्यासों में दाम्पत्य जीवन पिता - पुत्र सम्बन्ध, नारी का शोषण आदि समस्याएँ चित्रित है।